आश्रमवासिकपर्व कथासार

आश्रमवासिकपर्व में आश्रमवासपर्व, पुत्रदर्शनपर्व, नारदागमनपर्व नामक तीन उपपर्व हैं। इनमें कुल मिलाकर ३९ अध्याय हैं।

जनमेजय ने वैशम्पायन से पूछा कि हे महात्मन्! पाण्डव अधिकार प्राप्त कर लेने के बाद पुत्र, बन्धुओं के मारे जाने से निराश्रय राजा धृतराष्ट्र तथा देवी गान्धारी के साथ कैसे व्यवहार करते थे? पाण्डव कितने समय तक राज्य पालन किये? इसके उत्तर में वैशम्पायन ने कहा कि महात्मा पाण्डव राज्य पाने के बाद धृतराष्ट्र को ही आगे रखकर राज्य पालन करने लगे। धृतराष्ट्र की सलाह और आदेश का पालन करते उन्होंने पन्द्रह वर्षों तक राज्यशासन किया।

पाण्डव प्रतिदिन धृतराष्ट्र के पास जाकर उनके चरणों में प्रणाम करके, उनकी आज्ञा का पालन करते थे। कुन्ती भी सदा गान्धारी की सेवा में लगी रहती थी। उनकी सेवा से संतुष्ट गान्धारी और धृतराष्ट्र वहाँ सुख पूर्वक रहने लगे। जब धृतराष्ट्र को अपने पुत्र दुर्योधन की याद आती तो तब वह मन ही मन भीमसेन का अनिष्ट चिन्तन करता था। भीमसेन भी गुप्त रूप से धृतराष्ट्र के प्रति अप्रियवचन बोलता था। अप्रिय काम करता था। कदाचित् उसने धृतराष्ट्र और गान्धारी के सुनते हुए कठोरवचन कहा। उन्हें सुनकर धृतराष्ट्र और गान्धारी के मन में खेद हुआ। युधिष्ठिर के आश्रय में रहते हुए उन्हें पन्द्रह वर्ष बीत चुके थे। भीमसेन के वाग्बाणों से पीडित धृतराष्ट्र को खेद एवं वैराग्य हुआ। भीमसेन के अप्रिय व्यवहार युधिष्ठिर या अन्य पाण्डवों को पता नहीं था। एक दिन धृतराष्ट्र ने सुहृज्जनों को बुलवाकर गद्गदकण्ठ से इस प्रकार कहा--"मित्रो! मेरे ही अपराध से कौरव वंश का नाश हुआ। दुर्बुद्धि दुर्योधन को मैंने राज्याभिषिक्त किया। श्रीकृष्ण, भीष्म, विदुर, व्यास आदि महानुभावों के हितवचनों को नहीं सुना। पाण्डव गुणवान् हैं। पितृपितामहसम्पत्ति उन्हें नहीं दे दी। पन्द्रहवें वर्ष में आज मेरी आँखें खुली हैं। पाप की शुद्धि के लिए नियम का पालन कर रहा हूँ। कभी दो दिन पर और कभी चार दिन पर भूख बुझाने के लिये थोडा सा आहार करता हूँ। यह केवल गान्धारी ही जानती है। हम दोनों नियम पालन के व्याज से भूमि पर सोते हैं। अपने मित्रों से ऐसा कहकर धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर से तप करने वन जाने की अनुमति माँगी। उन के वचन सुनकर धर्मराज खिन्न हुआ और कहा कि हे महाराज! आप के उपवास तथा नियम के बारे में हमें पता ही न था। आप ही हमारे पिता, माता और परम गुरु हैं। आप ही राजा हैं। मैं राजा नहीं हूँ। आप की आज्ञापालक सेवक हूँ। जैसे दुर्योधन आदि आपके पुत्र थे वैसे हम भी हैं। आप मुझे छोडकर वन चले जायेंगे तो मैं भी आपका अनुसरण करूँगा। इस तरह दोनों के बीच बातचीत चलता रहा। इतने में महर्षि व्यास वहाँ आ पहुँचा। उन्होंने कहा कि युधिष्ठिर! अब ये राजा बूढे हो गये हैं। गान्धारी परम विदुषी है। पुत्रशोक को इन दोनों अधिक काल तक नहीं सह सकेंगे। इन्हें वन जाने की अनुमति दो। समस्त राजर्षियों ने अन्तिम काल में वन का ही आश्रय लिया। राजर्षियों का परम धर्म है कि युद्ध में या वन में उनकी मृत्यु हो। तुम अपने पिता

को वन में जाने को अनुमति दे दो। इस तरह व्यास महर्षि ने युधिष्ठिर को समझकर अपना आश्रम चला गया।

युधिष्ठिर ने व्यासमहर्षि की आज्ञा को पालन करने का अपना निश्चय धृतराष्ट्र के पास व्यक्त किया। तदनन्तर गान्धारी के साथ राजा धृतराष्ट्र अपना भवन गया। भोजन के बाद सब
लोग धृतराष्ट्र की सेवा में उपस्थित हुए। राजा धृतराष्ट्र ने धर्मराज को राजनीति का उपदेश दिया। वन जाने के लिये उसने प्रजा से भी अनुमति माँगा। जाने के पहले धृतराष्ट्र ने मृतपुत्रों के उद्देश्य से प्रजा को दक्षिणा देने का अपना विचार धर्मराज के पास व्यक्त किया। उसने धृतराष्ट्र का अभीष्ट पूरा किया। तदनन्तर धृतराष्ट्र ने अपने पुत्र तथा भीष्मादि को श्राद्ध करने हेतु युधिष्ठिर से विदुर के द्वारा धन मँगवाया। भीमसेन ने धन देने का विरोध किया। लेकिन अर्जुन ने उसे समझाया। भीमसेन भी अपनी सम्मति प्रकट की। धृतराष्ट्र दस दिनों तक दान, यज्ञ करके पुत्र पौत्रौं के ऋण से मुक्त हुआ। ग्यारहवें दिन प्रातः काल कार्तिक पूर्णिमा के दिन यात्राकालोचित इष्टि करवाकर अग्निहोत्र को आगे करके राजा धृतराष्ट्र गान्धारी के साथ वनयात्रा करने राजभवन से बाहर निकला। विदुर और संजय भी उनका अनुसरण किया। कुन्ती भी उनके पीछे चली। वन में न जाने का अनुरोध करने पर भी कुन्ती पाण्डवों का वचन नहीं मानी। उनके साथ आगे बढी। धृतराष्ट्र और गान्धारी के कहने पर भी कुन्तीदेवी घर न लौटी। वन में रहने का दृढ निश्चय कर चुकी।

राजा धृतराष्ट्र ने विदुर की बात मानकर गान्धारी, कुन्ती आदि के साथ गङ्गा तट पर निवास किया। सायं स्नानसन्ध्यादि समाप्त करके वे लोग गङ्गातट से कुरुक्षेत्र पहुँचकर वहाँ एक आश्रम में राजर्षि शतयूप से मिले। उनके साथ धृतराष्ट्र व्यास आश्रम को गया। वहाँ वनवास की दीक्षा लेकर धृतराष्ट्र शतयूप के आश्रम लौटकर वहाँ निवास करने लगा। तदनन्तर धृतराष्ट्र को देखने के लिये नारद, देवल, व्यास आदि श्रेष्ठ महर्षिगण वहाँ आये। कुन्तीदेवी ने सबकी यथोचित पूजा की। देवर्षि नारद ने उन्हें धार्मिक कथाएँ सुनायी। राजर्षि शतयूप ने नारद से पूछा कि आप समस्त वृत्तान्तों के तत्त्वज्ञ हैं। आप बताइये कि राजा धृतराष्ट्र किस लोक को जायेंगे। नारद ने कहा कि इन्द्र सभा में एक दिन धृतराष्ट्र के बारे में बातचीत चल रही थी। उस समय इन्द्र के मुख से मैं ने सुना था कि राजा धृतराष्ट्र के आयुर्दाय के पूर्ण होने में केवल तीन वर्ष ही शेष रह गये हैं। उसके समाप्त होने पर वे गान्धारी के साथ कुबेरलोक जायेंगे।

धृतराष्ट्र आदि के वन चले जाने के बाद पुरजन तथा पाण्डव चिन्ताक्रान्त हुए। निरन्तर माता की याद करते हुए पाण्डव राजकाज में पूर्णरूप से भाग नहीं ले पाते थे। एक बार कुन्ती को देखने की उत्कण्ठा पाण्डवों में उत्पन्न हुई। पहले सहदेव ने अपना अभिप्राय व्यक्त किया। द्रौपदी ने भी गान्धारी, माता कुन्ती तथा ससुरजी का दर्शन करने की अभिलाषा प्रकट की। राजा युधिष्ठिर ने अपने भाइयों सहित स्त्री और बूढों को आगे करके वन को प्रस्थान हुआ। आश्रम में

पाण्डवों ने माता कुन्ती, गान्धारी तथा धृतराष्ट्र का दर्शन करके उन्हें प्रणाम किया। संजय ने वहाँ के आश्रमवासियों को पाण्डवों का परिचय किया। युधिष्ठिर ने राजा धृतराष्ट्र से विदुर के बारे में पूछा कि अब वे कहाँ हैं? दिखाई नहीं पडते। इसके उत्तर में धृतराष्ट्र ने कहा कि विदुर कठोर तपस्या कर रहा है। आहार के बिना केवल वायु ही ले रहा है। इसलिये वह अत्यन्त दुर्बल हो गया है। इस गहरे वन में कभी कभी ब्राह्मणों को उसका दर्शन होता है। धृतराष्ट्र इस प्रकार कह ही रहे थे। इतने में दिगम्बर, कृशकाय विदुर दूर से आते दिखाई दिया। वह उस आश्रम की ओर देखकर सहसा पीछे की ओर लौट पडा। युधिष्ठिर अकेले ही उसके पीछे दौडा। वह वन के भीतर किसी एकान्त प्रदेश में किसी वृक्ष का सहारा लेकर खडा
हो गया। उनके आगे युधिष्ठिर भी खडा हो गया। विदुर योगशक्ति से युधिष्ठिर के शरीर में प्रवेश किया। धर्मराज ने उसके पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार करने का विचार किया। इतने में अशरीरवाणी सुनाई पडी राजन्! इनके शरीर का संस्कार करना उचित नहीं। क्योंकि वे सन्यास धर्म का पालन करते थे। उन्हें सान्तानिक नामक लोकों की प्राप्ति होगी। उनके लिये शोक नहीं करना चाहिए। अशरीरवाणी को सुनकर धर्मराज वहाँ से लौटकर धृतराष्ट्र के पास गया और सब कुछ उन्हें सुनाया। पाण्डव धृतराष्ट्र के पास बैठे थे। उस समय शतयूप आदि महर्षि, तथा भगवान् व्यास शिष्यों सहित वहाँ आ पहुँचे। व्यास महर्षि ने विदुर और युधिष्ठिर को धर्मस्वरूप कहकर धृतराष्ट्र से पूछा कि राजन्! तुम मुझसे कौन सी अभीष्ट वस्तु पाना चाहते हो। किसको देखने, सुनने, अथवा स्पर्श करने की इच्छा हो उसे मैं पूर्ण करूँगा।

(२) पुत्रदर्शनपर्व

महर्षि व्यास ने धृतराष्ट्र से अपने मनोरथ की सिद्धि के लिये वर माँगने को कहा। महर्षि की बात सुनकर धृतराष्ट्र ने कहा कि भगवन्! आप जैसे महात्माओं के समागम से मेरा जीवन धन्य है। आप लोगों के दर्शन मात्र से मैं पवित्र हो गया। अब मुझे परलोक से कोई भय नहीं है। परन्तु दुर्बुद्धि दुर्योधन के दुष्ट व्यवहार से मेरे सारे पुत्र मारे गये हैं। सारे भूपाल दिवंगत हो गये। मेरे पापी मूर्ख पुत्र ने राज्य का लोभ करके अपने कुल का नाश कर डाला। इस कारण मुझे शान्ति नहीं मिलती है। धृतराष्ट्र के विलाप से गान्धारी अत्यन्त दुःखित हुई और इस प्रकार बोली-महर्षे! महाराज को अपने मरे हुए पुत्रों के लिये शोक करते आज सोलह वर्ष बीत गये। किन्तु अब तक इन्हें शान्ति नहीं मिली। प्रभो! प्रभु, मैं और कुन्ती तीनों जैसे शोक रहित हो जायें वैसा आप अनुग्रह कीजिए। कुन्ती ने गुप्तरूप से पैदा हुए अपने पुत्र कर्ण का स्मरण किया। व्यास के अनुरोध से कुन्ती ने कर्ण के जन्मरहस्य बताया और अपने हृदयदाहक शोक को दूर करने की प्रार्थना की। महर्षि ने उसे सांत्वना करते कहा कि बेटी! इसमें तुझे कोई अपराध नहीं है। देवधर्म के द्वारा मनुष्यधर्म दूषित नहीं होता। मानसिक चिन्ता दूर करो।

व्यासमहर्षि के कहने से सब लोग गङ्गा तट पहुँचे। पाण्डव, धृतराष्ट्र आदि सब लोग व्यासमहर्षि के समीप बैठे। व्यासजी ने गङ्गा जल में प्रवेश करके पाण्डव तथा कौरव पक्ष के सब लोगों का आह्वान किया। तदनन्तर जल के भीतर से कौरव और पाण्डवों की सेना, भीष्म, द्रोण आदि समस्त राजा, सपुत्र विराट, द्रुपद, द्रौपदी के पाँच पुत्र, अभिमन्यु तथा घटोत्कच जल से बाहर प्रकट हो गये। उस समय व्यासमहर्षि ने अपने तपोबल से धृतराष्ट्र को दिव्यनेत्र प्रदान किया। गान्धारी भी दिव्यज्ञानबल से संपन्न हो गयी। उन दोनों ने युद्ध में मारे गये अपने पुत्रों तथा बन्धुओं को देखा। वहाँ आयी हुई स्त्रियाँ अपने पितृभ्रातृपति पुत्रों से मिलकर बहुत प्रसन्न हुईं। उनका सारा दुःख दूर हो गया। एक रात तक वहाँ विहार करके वीर लोग व्यासजी के विसर्जन करने से भागीरथी में अदृश्य हो गये। व्यास के सलाह के अनुसार साध्वी स्त्रियाँ गङ्गा में प्रवेश कर शरीर से छुटकारा पाकर अपने अपने पतिलोक चले गये। इस वृत्तान्त को सुनकर मनुष्यों को आश्चर्य तथा आनन्द हुआ।

जनमेजय को शङ्का हुई कि मरे हुए पुरुषों का पुनः उसी रूप से दर्शन कैसे हो सकता
है? इसके उत्तर में व्यासशिष्य वैशम्पायन ने कहा कि शरीर तो कर्मजनित है। इसलिये समस्त कर्मों का फल भोग किये बिना उनका नाश नहीं होता। पृथिव्यादि पञ्च महाभूत नित्य हैं। संसार दशा में नित्य महाभूतों का अनित्य शरीर के साथ नित्य संयोग है। अनित्य शरीर का नाश होने पर नित्य महाभूत उससे वियुक्त होते हैं, विनाश नहीं। व्यास के अनुग्रह से जनमेजय को अपने पिता परीक्षित् का दर्शन प्राप्त हुआ। धृतराष्ट्र की अनुमति पाकर युधिष्ठिर भाइयों के साथ हस्तिनापुर लौट आया।

(३) नारदागमनपर्व

पाण्डवों के तपोवन से आकर दो वर्ष बीत गये। एक दिन महर्षि नारद युधिष्ठिर के यहाँ आया। अतिथिसत्कार के बाद धर्मराज के पूछने पर नारद ने कहा कि राजन्! आप लोग वन से लौटने के बाद राजा धृतराष्ट्र, गान्धारी, कुन्ती, सञ्जय, अग्निहोत्र और पुरोहित के साथ कुरुक्षेत्र से गङ्गाद्वारा चले गये। एक दिन धृतराष्ट्र गङ्गास्नान के बाद आश्रम की ओर चल पडा। इतने में वन में चारों ओर दावाग्नि प्रज्वलित हो उठी, धृतराष्ट्र तथा तुम्हारी माता दुर्बलता के कारण वहाँ से भाग न सकें। धृतराष्ट्र ने संजय को वहाँ से शीघ्र चले जाने को कहा। संजय की सूचना के अनुसार वे तीनों योगमार्ग अपनाकर निश्चेष्ट हो गये और दावाग्नि में जलकर भस्म हो गये। संजय तो बच गया। इस वृत्तान्त को सुनकर पाण्डव बहुत दुःखी हो गये। नारद ने युधिष्ठिर से कहा कि नरेश! धृतराष्ट्र लौकिक अग्नि से दग्ध नहीं हुआ। सुना कि धृतराष्ट्र ने वन में प्रवेश करते समय याजकों द्वारा इष्टि करवाकर तीन अग्नियों को वहीं त्याग दिया। याजकगण उन अग्नियों को निर्जन वन में छोडकर अपने अपने स्थान चले गये।

वहीं अग्नि बढकर सारे वन को भस्मसात् कर दिया। अपनी ही अग्नि से दग्ध धृतराष्ट्र उत्तम गति को प्राप्त हुए हैं। उनके लिये शोक न करो। नारद ने कहा कि नरेश्वर! तीनों को उदकक्रिया करके कर्तव्य का पालन करो। धर्मराज ने गङ्गा के समीप जाकर जलाञ्जली दी। बारहवें दिन विधिवत् सब को श्राद्ध करके पाण्डव सहित युधिष्ठिर हस्तिनापुर चला गया।

।। आश्रमवासिकपर्व कथासार समाप्त ।।